International Journal of Applied Research 2020; 6(8): 24-26

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(8): 24-26
www.allresearchjournal.com
Received: 15-05-2020
Accepted: 17-06-2020

डॉ. ऋतु बाला
प्रोफेसर शोध निर्देशिका शिक्षा संकाय, टांटियाए विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

प्रियंका बिश्नोई
शोधार्थीए शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. ऋतु बाला
प्रोफेसर शोध निर्देशिका शिक्षा संकाय, टांटियाए विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. ऋतु बाला और प्रियंका बिश्नोई

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने का सर्वोत्तम साधन है शिक्षा प्राप्त करके ही मानव श्रेष्ठ प्राणी के रूप में निखरता है जीवन में उदारता, उच्चता, श्रेष्ठता, उत्कृष्टता एवं सौन्दर्य शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा प्रक्रिया के दौरान प्राप्त ज्ञान तथा कौशल के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान कर सकता है।

19वीं शताब्दी के आखिरी दशक में बंगाल तथा महाराष्ट्र में विशेष विचार मंथन चल रहा था। नये पुराने का संघर्ष चल रहा था। देश के नव जागरण में इन दिनों की विचारधाराओं का बहुत बड़ा योगदान रहा। इसी क्रम में नाम आता है महान शख्शियत आचार्य विनोबा भावे, विनोबा ने शिक्षा के दो स्वरूपों का वर्णन किया है। प्रथम आन्तरिक शिक्षा एवं द्वितीय बाह्य शिक्षा। इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि ये दोनों एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। वस्तुतः सच्ची शिक्षा दोनों प्रकार की शिक्षाओं का सम्मिश्रण है। विनोबा जी सम्पूर्ण शिक्षा को सीखने की प्रक्रिया से जोड़ते है। उनकी दृष्टि से सीखना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। अतः शिक्षा की प्रक्रिया भी जन्म से मृत्युपर्यन्त चलती रहती है। यह तभी प्राकृतिक कही जायेगी सब सीखने की क्रिया इस प्रकार की हो कि बच्चे को पता ही न चले कि वह कुछ सीख रहा है। जिस प्रकार एक तोता अन्दर से स्वाभाविक रूप से फूटता है। विनोबा जी उनसे असहमत है कि आज जिस प्रकार पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान के नाम पर कुछ जानकारी बच्चों के मस्तिष्क में ठूंस दी जाती है। वे शिक्षा नहीं मानते उनका कहना है कि शिक्षा इतनी सहज और स्वाभाविक होनी चाहिए कि न तो विद्यार्थी को यह ज्ञान हो कि उसे शिक्षा मिल रही है और न शिक्षक यह समझे कि वह शिक्षा दे रहा है। आचार्य विनोबा का तो यहाँ तक कहना है कि हमें समझ लेना चाहिए कि शिक्षा में कुछ गड़बड़ी है।

समस्या का औचित्य

वर्तमान में भारत की स्थिति से कोई भी अनभिज्ञ नहीं है जो भारत तप, त्याग, प्रेम, सद्भाव आदि सद्वृत्तियों का परिचायक था वही भारत अब स्वार्थ, द्वेष, घृणा, दुष्प्रवृत्तियों से ग्रसित होता जा रहा है। हमने विकास तो किया है पर हम अपने आदर्शों के मूल्यों को विस्मृत करते जा रहे है। यद्यपि देश में आजादी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में मात्रात्मक विकास तो हुआ है, किन्तु गुणात्मक विकास अभी भी अपेक्षित है। हम अपने आदर्शों व मूल्यों की कब्र पर विकास की गगनचुम्बी इमारत खड़ी कर रहे हैं।

आचार्य विनोबा भावे ने अपने समय की स्थिति को उभारने के लिए अपने लेखों के माध्यम से समाज की गतिविधियों की चर्चा को उभारने का भरसक प्रयत्न किया है। इन्होंने अपने लेखों के माध्यम से जनता में फैली हुई बुराईयों को प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट कराया है। शोधार्थी की दृष्टि से यह विषय उपयुक्त लगता है। अतः इस विषय पर कार्य करना तर्क संगत भी है तथा औचित्यपूर्ण एवं मौलिक भी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनेकों समस्यायें दृष्टिगत होती है। मसलन मूल्यविहीन शैक्षणिक वातावरण, बढ़ती प्रतिस्पर्धा, अनुशासनहीनता, छात्र असंतोष, दोषपूर्ण परीक्षा व्यवस्था, शिक्षा से जीवन कला का अभाव, शैक्षणिक संस्थानों पर बढ़ता सरकारी शिकंजा छात्र–शिक्षकों के मध्य वैमनस्यता इत्यादि। आचार्य विनोबा भावे एक ऐसे युगदृष्टा हुए है। जिन्होंने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के दोषों का उपाय आज के लगभग 80 वर्ष पूर्व ढूंढ लिया था, शोधकर्त्री के मन में अनेकों प्रश्न उत्पन्न हुए, जैसे–

- क्या वर्तमान शिक्षण व्यवस्था के दोषों का हल संभव है ?
- क्या शिक्षण को जीवन कौशल से नहीं जोड़ा जा सकता है ?

- क्या शिक्षक व शिष्य के मध्य सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाया जा सकता है?
- क्या शिक्षण व्यवस्था में आध्यात्मिकता का स्थान नहीं होना चाहिए ?
- क्या शिक्षण व्यवस्था मातृभाषा के जरिए नहीं कराई जा सकती है ?
- क्या शिक्षा को उद्योग से नहीं जोड़ा जाना चाहिए ?

समस्या कथन

"वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता'

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

समस्या कथन की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में निम्न लिखित उद्देश्यों को शामिल किया गया है–

1. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का शिक्षा के अर्थ के संदर्भ में अध्ययन करना।
2. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का शिक्षा के उद्देश्य के संदर्भ में अध्ययन करना।
3. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का शिक्षा के माध्यम के संदर्भ में अध्ययन करना।
4. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का पाठ्यक्रम के संदर्भ में अध्ययन करना।
5. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का शिक्षण पद्धति के संदर्भ में अध्ययन करना।
6. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का विद्यार्थियों के संदर्भ में अध्ययन करना।
7. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का शिक्षकों के संदर्भ में अध्ययन करना।
8. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का शिक्षक छात्र सम्बन्ध के संदर्भ में अध्ययन करना।
9. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का शिक्षा के केन्द्र के संदर्भ में अध्ययन करना।
10. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का छात्र अनुशासन के संदर्भ में अध्ययन करना।
11. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का स्त्री शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन करना।
12. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का शिक्षा के साधन के संदर्भ में अध्ययन करना।
13. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचारों का नई तालीम के संदर्भ में अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – शिक्षा के माध्यम के संदर्भ में निहित है ?
2. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – शिक्षा के उद्देश्यों के संदर्भ में निहित है ?
3. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – पाठ्यक्रम के संदर्भ में निहित है ?
4. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – शिक्षण पद्धति के संदर्भ में निहित है ?
5. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – शिक्षक–छात्र सम्बन्ध के संदर्भ में निहित है ?
6. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – छात्र अनुशासन के संदर्भ में निहित है ?
7. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – स्त्री शिक्षा के संदर्भ में निहित है ?
8. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – शिक्षा के साधनों के संदर्भ में निहित है ?
9. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार – नई तालीम के संदर्भ में निहित है ?
10. क्या आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार वर्तमान में भारतीय शैक्षिक परिस्थितियों में प्रासंगिक हैं ?

शोध विधि

किसी अनुसंधान कार्य की सफलता उसकी योजना एवं क्रिया विधि पर आधारित होती है। शोध विधि के क्षेत्र में मुख्य तौर पर दो विधियों–परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत शोध कार्य मुख्यतः अध्ययन एवं मनन पर आधारित है। यह शोध अनुसंधान ऐतिहासिक एवं दार्शनिक शाखा से सम्बन्धित होने के कारण आचार्य विनोबा भावे द्वारा रचित साहित्य, उनके विचार एवं अन्य लेखकों तथा विचारकों द्वारा विनोबा से सम्बन्धित रचित प्रकाशित कार्य के अध्ययन पर आधारित है,। प्रस्तुत शोध अध्ययन दार्शनिक विधि पर आधारित है।

साहित्य स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में साहित्य स्रोत में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत को सम्मिलित किया गया हैं। शोधकर्त्री द्वारा आचार्य विनोबा भावे के द्वारा रचित रचनाएँ तथा समकालीन महापुरुषों द्वारा विनोबा पर रचित रचनाओं एवं सम्बन्धित साहित्य को सम्मिलित किया गया है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष एवं विवेचना

- आचार्य विनोबा भावे ने आधुनिक यंत्रों, वर्कशॉप आदि को स्थान देकर शिक्षा को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया है।
- आचार्य विनोबा भावे के शिक्षण में चित्त, संयम तथा सहयोग को विशेष रूप से स्थान तो दिया ही गया है, इसके अतिरिक्त शिक्षा संस्थानों के साथ उद्योग और विज्ञान का योग इनकी मौलिक देन है।
- आचार्य विनोबा भावे ने कई तालीम के अन्तर्गत बाल शिक्षण से अधिक लोक शिक्षण पर विचार किया है। वे हृदय परिवर्तन के द्वारा समाज परिवर्तन कराना चाहते है, जिसके लिए विचार परिवर्तन अनिवार्य है।
- आचार्य विनोबा भावे समाज में नये चित्त का निर्माण कर अक्षोभ मन की स्थिति उत्पन्न करना चाहते थे। इसलिए आलोचनात्मक प्रवृत्ति तथा असहयोगी प्रतिकार में इनकी अपनी विशेष अभिरुचि नहीं है।
- आचार्य विनोबा भावे ने एक घण्टें का स्कूल तथा दो घण्टों का महाविद्यालय की नव कल्पना देकर शिक्षा को अधिक जनतांत्रिक बनाने का प्रयास किया।
- आचार्य विनोबा भावे स्वतंत्र चित्त का परिणाम है 'आचार्य कुल' इसमें दो खण्ड है। 'आचार्य' और 'कुल' आचार्य शब्द आचरण, विचरण, विचार, प्रचार करने वाले तपः पूत शिक्षकों का ही सूचक है। विनोबा जी ने आचार्य कुल के द्वारा शिक्षकों को अहिंसक क्रान्ति के अतिरिक्त समूचे समाज में क्रान्ति लाने की अपेक्षा की हैं वास्तव में बिना शिक्षकों के तपः पूत चरित्र और विचार के समाज परिवर्तन असम्भव है। पहले गुण विकास करना तथा बाद में समाज का आशीर्वाद प्राप्त करना आवश्यक है। तभी शिक्षकों के द्वारा अहिंसक क्रान्ति हो सकती है। अतएव समाज के विकास के लिए पक्षमुक्त तथा कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों का संगठन अनिवार्य है।
- आचार्य विनोबा भावे ने सम्पूर्ण जीवन के शिक्षण का विचार किया था।
- आचार्य विनोबा भावे के लिए नई तालीम वस्तुतः मूल्य परिवर्तन का वाहक हैं जिसमें समाज में वास्तविक क्रान्ति आती है।

- आचार्य विनोबा भावे को 'नई तालीम' की विशाल दृष्टि समाज का सुख सरस रूप में भावी भारतीय शिक्षा व जीवन मूल्यों में रूपाकार लेता दिखाई दिया।
- आचार्य विनोबा भावे के अनुसार हरेक धन्धें का साधन दैवीय शास्त्र की दृष्टि से देखने योग्य है। उनके अनुसार हर पैतृक कार्य को व्यक्ति करता है, उसके अन्दर कर्मयोग जोड़ दिया जाये तो जुलाहा कपड़े बनाने के काम को नीरस नहीं समझेगा। वरन् ईश्वर प्राप्ति का एक योग मानते हुए वह कार्य करेगा, किसान अन्न पैदा करेगा तो उच्च आदर्शों के साथ करेगा, उसके लिए हल केवल साधन नहीं, आत्म कल्याण का साधन होगा, सुनार, लौहार की धौंकनी और हथौड़ा निर्जीव औजार नहीं संसार को पार करने के साकर साधन होंगे। इसलिए विनोबा जी ने 'नई तालीम' को सहस्त्र शीर्ष शेषनाग के समान बहुआयामी माना है। जिस पर सारे रचनात्मक कार्य टिके है। जरुरत केवल ऐसे समर्पित शिक्षकों की है जो इस प्रकार के धन्धों में स्वयं को पारंगत हो तथा उच्च आदर्श और मूल्यों के धारक हो।
- आचार्य विनोबा भावे के स्त्री शिक्षा के स्पष्ट विचार थे। वे 'स्त्री–मुक्ति' के बदले 'स्त्री शक्ति जागरण' शब्द का प्रयोग करते थे। विनोबा जी स्त्रियोचित स्वभाव व सामर्थ्य में कौशल लाना चाहते थे। साथ ही आध्यात्मिक आस्था के बीज को पुष्ट करना चाहते थे। जिससे वे धारक बन सकें यानि शंकराचार्य के समान तेजस्वी बन सकें। वाद–विवाद करके भी सही बात को मनवा सकें। स्त्रियां चरित्र की दृष्टि से इतनी उच्च हो कि वे सामान्य चरित्रगत प्रलोभनों से दूर रह सकें। बाल गोपन (बच्चों का पालन) की शिक्षा में निपुण हो, पाक कला में निपुण हो, स्त्री का अन्नपूर्णा स्वरूप बरकार रहे, स्त्रियों को निश्चित आयु के पश्चात् सर्वहित की धारण से सन्यास को अपनाना चाहिए। ब्रह्माचरिणी स्त्रियों के लिए 'ब्रह्म विद्या मंदिर आश्रम' की स्थापना उनका एक मौलिक प्रयोग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मजूमदार, धीरेन्द्र (1971) ''शिक्षा में क्रान्ति और आचार्यकुल'', पृ.सं. 13
2. विनोबा भावे (1973) ''आचार्य कुल'', पंचम संस्करण, वाराणसी : सर्व सेवासंघ प्रकाशन, पृ.सं. 7–8।
3. विनोबा भावे (2010) ''तीसरी शक्ति'', सातवाँ संस्करण, वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, पृ.सं. 206।
4. शाह, कान्ति (2009), ''विनोबा जीवन और कार्य'', सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 2009, पृ.सं. 211।
5. विनोबा भावे (1979) ''शिक्षा की दिशा'', मैत्री, पृ.सं. 65।
6. शाह, कान्ति (2009), ''विनोबा जीवन और कार्य'', सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 2009, पृ.सं. 176।
7. विनोबा (1964) ''थॉट्स ऑन एज्यूकेशन'', वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, पृ.सं. 10।
8. पूर्वोक्त, पृ.सं. 20।
9. विनोबा (2010) ''शिक्षण विचार'', वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, पृ.सं. 130।